छSSSSSी!

अच्छा, एक बात तो बताओः

तुम किसी चीज़ को छी ...गन्दी कहते हो है तो क्यों???

- उससे गन्दी बदबू आती है
- ऐसे ही
- दोस्त कहते हैं
- उसके कारण दर्द हुआ था
- देखने में अच्छी नहीं लगती

क्या जो कचरा तुम फेंकते हो उसमें कई अलग-अलग चीज़ें होती हैं? जैसे, बैट्री जैसी स्वास्थ्य के लिए खतरनाक चीज़ें, सब्ज़ी के छिलकों जैसी मिट्टी में मिलकर गल जाने वाली चीज़ें (बायोडिग्रेडेबल), प्लास्टिक की बोतलों जैसी हज़ारों साल तक बनी रहने वाली चीज़ें।

लिसलिसे कीड़े कितने **छी** होते हैं!

कीट-पतंगे **क्या खूब** होते हैं...

प्रकृति में इनकी अहम भूमिका तो है ही, इनसे फूलों का परागण भी होता है।

कचरा भी **क्या खूब** हो सकता है...

अगर कचरे को रिसाइकिल कर दिया जाए तो न वो इकट्ठा होगा और न ही सड़ेगा-गलेगा। रिसाइकिल के लिए ज़रूरी है प्लास्टिक, धातु, कागज़ और खाने-पीने की बची वस्तुओं की छटाई होना। मिला-जुला कचरा सड़ता रहता है और ज़मीन, पानी और हवा को प्रदुषित करता रहता है।

कचरा बीनने वालों को तो यह करना ही पड़ता है!

जो काम हम नहीं करते हैं उन्हें इन्हीं को करना पड़ता है। यानी कचरे के डिब्बे में हाथ डालकर कचरे की छँटाई करना।

केले का पेड़ भी क्या खूब है!

सिर से पाँव तक काम आने वाला – उसके फल, फूल, तना, पत्ते... सब के सब बड़े काम के हैं। शायद इसीलिए केरल में एक कहावत चल निकली है कि दोस्ती हो तो केले के तने जैसी। जितनी बार भी काटो वो बढ़ता जाएगा।

खैर, एक सवाल केले के बारे में...

अगर केले के छिलके को प्लास्टिक, बैट्री, चॉकलेट की पन्नी आदि जैसे कचरे के साथ फेंका जाए तो आने वाले पाँच सालों में क्या होगा?

- उत्पन्न गैसों के कारण हवा प्रदूषित हो जाएगी।
- भूमिगत जल प्रदुषित हो जाएगा।
- उस जगह पर बदबू फैल जाएगी। जिससे वहाँ चूहे और मक्खी-मच्छर फैल जाएँगे।
- वहाँ न बच्चे खेल पाएँगे और न ही पेड़-पौधे उग पाएँगे।
- ज़मीन प्रदूषित हो जाएगी।

लेकिन अगर इसे दूसरे कचरे के साथ न मिलाया जाए तो केले का छिलका मिट्टी में मिलकर दुसरे पेड़-पौधों के लिए बढ़िया खाद बन जाता है।

माँ कहती है बच्चों को तो दूध-केला खाना चाहिए। बड़ा पौष्टिक होता है यह। वो यह भी तो कहती हैं कि दस्त हो या कब्ज़ केला दोनों में फायदा करता है।

मुझे आज तक समझ नहीं आया कि केले को कैसे पता चलता है कि उसे ठीक क्या करना है?

क्या?

- **चोरी करना भी छी है?**
- **वक्त बर्बाद करना भी छी है?**
- **किसी को परेशान करना भी छी है?**

साभार: डेली डम्प, बैंगलोर

बाबा या बावा?

जगदीश स्वामीनाथन की एक पेंटिंग

मनजीत बावा

चकमक के पिछले अंक में मनजीत बावा बाबा हो गए न?

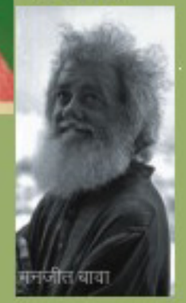

एक बार चित्रकार जगदीश स्वामीनाथन के साथ मनजीत बावा यात्रा कर रहे थे। दोनों दढ़ियल कलाकार थे! एक दिन दोनों ट्रेन में सफर कर रहे थे। किसी स्टेशन में मनजीत कुछ लेने ट्रेन से उतरे। इतने में कोई आया और उनके पाँव छूकर बोला, "स्वामीजी देखिए,...."

मनजीत ने तुरन्त टोका, "स्वामी तो उधर ट्रेन में बैठे हैं, मैं तो मनजीत हूँ!"

दायाँ या बायाँ...

डेस्क पर बैठकर अपना दाहिना पैर ज़मीन से थोड़ा ऊपर उठाओ और उसे घड़ी की दिशा में घुमाते हुए एक गोला बनाओ। ऐसा करते हुए अपने दाहिने हाथ से हवा में 6 लिखने की कोशिश करो। अरे! ये तुम्हारे पैर की दिशा कैसे खुद-ब-खुद बदल रही है।